P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मृदा प्रदूषण निवारण में वेदों की भूमिका एक समसामयिक विवेचन

दिनेश कुमार
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
टांटिया विश्वविद्यालय,
रीको, श्रीगंगानगर

सुनील बाघला
अध्यक्ष,
कला संकाय विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय,
रीको, श्रीगंगानगर

सारांश

पृथ्वी के प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनना होगा, क्योंकि दैवीय गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही मृदा प्रदूषण होने से बचा जा सकता है। वेदों में बीजों को कृषि भूमि में बोने से पहले गाय के घी व दूध से उपचारित करने के लिए कहा गया है। यज्ञ के द्वारा बचा हुआ राख भी खाद की तरह कृषि भूमि में काम किया जा सकता है। वेदों में लिखा है कि भूमि को माता हम तभी कह सकते हैं जब उसके आंचल को प्राकृतिक वनस्पति व वृक्षों से ढक देंगे व उसके सरंक्षण के लिए प्राकृतिक खाद व जैविक संतुलन को बनायेंगे तब ही हम इसके पुत्र कहलाने के अधिकारी होंगे।

वैदिक परम्परा के अनुसार पृथ्वी में मातृत्व भावना रखें, यज्ञ का प्रयोग करें। सार्वजनिक हित के लिए पवित्र बुद्धि से किये वैज्ञानिक अन्वेषण जो बहुपक्षीय एवं दूरगामी हित को भी साधने वाले हों किये जाएँ तथा पृथ्वी प्रदूषण करने वाले समाज विरोधी तत्त्वों के साथ दण्ड सहिंता के अनुसार सांवैधानिक नियमों का कड़ाई के साथ पालन कराया जाए तो सुरसा के मुख के समान फैलते पृथ्वी के प्रदूषण के विस्तार को न्यून करते हुए समाप्त कर सकेंगे।

मुख्य शब्द : मृदा प्रदूषण, मानव, वेद, ऋषि, पृथ्वी, दैवीय गुण, वैदिक परम्परा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, टीका ग्रन्थ,

प्रस्तावना

वैदिक ऋषियों का ज्ञान–विज्ञान सर्वश्रेष्ठ था। वैदिक ऋषियों ने अपने आपको भूमि का पुत्र होने की घोषणा की है। "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या"[1] अर्थात्– भूमि हमारी माता है, हम इसके पुत्र है। पाञचमहाभौतिक तत्त्वों में पृथ्वी सब से स्थूल एवं दृंक्गोचर तत्त्व है। उत्पत्ति के क्रम में इसकी उत्पत्ति सब के अन्त में मानी गई है। पृथ्वी जैवीय प्रक्रिया का आधार होने के कारण लोक में इसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वैदिक साहित्य में पृथ्वी के स्वरूप पर गहन चिन्तन किया गया है। वैदिक संहिताओं में उपलब्ध नामों का परिगान करते हुए वैदिक कोष निघण्टु में 21 नामों का परिगणन किया है।[2] अर्थववेद में रत्नों से भरपुर ह्रदयकली पृथ्वी को नमस्कार किया है।[3]

वैदिक ऋषियों की हरित पृथ्वी के प्रति अपार निष्ठा है। हरित भूमि उनकी दृष्टि से प्राणिजगत् के लिए अत्यन्त हितकारी है।[4] अर्थात्– वनस्पति के द्वारा ही पृथ्वी का श्रृंगार किया जाता है। वनस्पति से ही पृथ्वी सुन्दर दिखती है। वर्तमान में हरी–भरी रहने वाली पृथ्वी को स्वार्थी मनुष्य ने वन विहीन एवं बन्जर बनाना शुरू कर दिया है। वैदिक ऋषियों ने चारों ही संहिता ग्रन्थों में पृथ्वी को माता का महनीय स्थान प्रदान किया तथा उसे माता के समान पुत्रों का लालन–पालन करने वाली कहा गया है।[5] आधुनिक चिन्तन में पृथ्वी का मिट्टी के रूप में अध्ययन किया गया है। इस दिशा में भूमि या पृथ्वी पर्यावरण का संघटक मात्र है। पृथ्वी समस्त प्राणियों का निवास होने के कारण भूगोल में इसका अध्ययन करना आवश्यक है। वर्तमान में जो मृदा प्रदूषण का प्रभाव बढ़ रहा है, उसकी ओर ध्यान आकर्षित करना तथा वेदों के द्वारा जो समाधान बताये गये है, उनकी ओर जनमानस का ध्यान आकर्षित करने का प्रस्तुत शोध पत्र में प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यही है कि प्राचीन ऋषि–मुनियों ने मृदा को प्रदूषण से रहित तथा संरक्षित करने के लिए जो प्रयास किए उन प्रयासों को जन–मानस तक पहुँचाना। मृदा का मानव द्वारा ह्रास करना, अपरदन करना तथा मृदा को अपने स्वार्थ हेतु विषैला बनाना इस गम्भीर

समस्या से निबटने के लिए वेदों में बताए गए प्रदूषण रहित उपायों से सार–गर्भित रूप से अवगत करवाना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वैदिक इन्डेक्स, वैदिक कोष से वेद मंत्रों की व्याख्या की गई है, साथ ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के टीका ग्रन्थों से मृदा प्रदूषण के निवारण तथा मृदा के संरक्षण के वैदिक साक्ष्यों को दर्शाया गया है तथा वैदिक साहित्य के अध्ययन की विधियों का समावेश किया गया है।

विवरण

समस्त ब्रह्माण्ड में यह पृथ्वी ही जीवन का आधारबनी प्राणियों केपृथ्वी के माता सम्बंध से तात्पर्य है कि पृथ्वी समस्त चराचर जगत् का लालन–पालन करने वाली है। पृथ्वी पर मृदा का आविर्भाव है जिससे वनस्पति, वृक्ष, जीव–जन्तु तथा मानव अपना–अपना जीवन–यापन करते हैं। मृदा चार संघटनों से बनी हुई है।[6]

1. जीवित जीव एवं जैविक पदार्थ,
2. खनिज पदार्थ,
3. मृदा घोल
4. मृदा वायुमण्डल माना गया है।

मृदा मण्डल में घटित होने वाली ये भौतिक एवं रासायनिक क्रिया–प्रतिक्रिया विभिन्न स्तरों पर एक साथ गतिशील रहती है। मृदा निर्माण की प्रक्रिया को विश्लेषकों ने चार वर्गों में विभाजित किया हैः–

1. मृदा–सृंवद्धि,
2. मृदा–क्षति,
3. पदार्थों का विस्थापन,
4. पदार्थों का रूपान्तरण।

इन प्रक्रियाओं के द्वारा एक निश्चित समयावधि में घटित प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप मृदा का निर्माण होता है।

मृदा प्रदूषण

पृथ्वी के साथ सम्पूर्ण जड़ और चेतन का आधार आधेय सम्बंध है। मृदा के साथ जन्य जनित और पौष्य पोषिता सम्बंध भी है। अर्थात् –हमारे शरीर के निर्माण में पार्थिव तत्वों की ही सर्वाधिकता होती है और तद्नन्तर भी हमारा सम्पूर्ण पोषण पार्थिव आहार श्रृंखला से ही होता है। अतः मृदा के अस्तित्व की कल्पना का भी कोई आधार नहीं होगा। मृदा के साथ ही अस्तित्व होने के कारण मृदा की मौलिकता में परिवर्तन होने पर सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तन्त्र गड़बड़ा जाता है और श्रृंखलाबद्ध पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज के वातारवण को दूषित न होने देना उसका परम कर्त्तव्य है। वर्तमान में मानव ने ईर्ष्या–द्वेष, छल–कपट, मात्सर्य, लोभ जैसी दुर्भावनाएँ समाज के वातावरण को प्रदूषित करते रहते हैं। मानव पृथ्वी के समस्त उपकारों को भूल गया और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए वृक्षों को काटकर समतल मैदान बनाये, अन्न उगाया। उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों व कीटनाशकों का छिड़काव किया जिससे मृदा में विषाक्तता बढ़ती गई। औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थों, घरों में मल को बहा देना, कूड़ा करकट जगह–जगह फैलाना तथा परमाणु परिक्षणों से मृदा को दूषित किया गया।

मृदा प्रदूषण के प्रभाव

मृदा–प्रदूषण का प्रभाव मिट्टी के भौतिक तथा रासायनिक गुणों पर पड़ता है। इससे मिट्टी की वातन क्रिया प्रभावित होती है, जिससे मिट्टी के उपयोगी सूक्ष्मजीवों की संख्या घट जाती है।[7] मृदा में धातुओं के सञ्चय होने से फसलें प्रभावित होती है और भूमिगत जल दूषित होता है। अधिक कीटनाशियों के प्रयोग से भी अनेक उपयोगी सूक्ष्मजीव मर जाते हैं। मिट्टी में केंचुओं की संख्या घट जाती है। अन्ततः फसलों के माध्यम से उत्पन्न अन्न आदि से मनुष्य का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। मृदा अपरदन से पोषण–तत्वों की कमी होने से वनस्पतियाँ ठीक से वृद्धि नहीं कर पाती। मिट्टी में लवणता तथा क्षारता उत्पन्न होन से खेत बंजर बन जाते हैं। अतः जो भूमि लालन–पालन करती थी वह बंजर होने लगी, उपजाऊपन कम होने लगा तथा मृदा से दुर्गन्ध निकलने लगी।

मृदा प्रदूषण निवारण के आधुनिक उपाय

पृथ्वी को प्रदूषण से बचाने के लिए आधुनिक विशेषज्ञों ने गम्भीर प्रयास किये हैं, किन्तु उनका सर्वाधिक ध्यान कृषि भूमि पर ही है। "पार्थिव तत्वों का हतास होना" उनकी दृष्टि से अभी तक कोई समस्या नहीं है, अतः समाधान भी उन्होंने नहीं सुझाये है। मृदा प्रदूषणों में अपशिष्ट प्रदूषण और कृषि भूमि का प्रदूषण ही शेष है।

अपशिष्ट प्रदूषण से छुटकारे के लिए नगर पालिकाओं के एवं पृथक रूप से सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है।ठोस पदार्थों जैसे–कागज, रबड़, गत्ते, चीथड़े आदि को जलाकर भूमि–प्रदूषण पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है। कूड़े को जमीन में दबाकर उससे मुक्ति पाई जा सकती है। ठोस पदार्थों को पुनः प्रयोग के लिए तैयार किया जाए।

कृषि योग्य भूमि के दो प्रकार अपरदन–क्षरण एवं रासायनिक हैं। मृदा अपरदन के कारण विश्वस्तर पर प्रतिवर्ष लाखों हेक्टेयर उत्तम कृषि भूमि का विनाश होता जा रहा है। दलहनी फसलों और पशुचारों को बोने से मृदा अपरदन कम किया जा सकता है। मिश्रित फसलों की कृषि–पद्धति को अपनाना चाहिए। इससे खेत का अधिक भाग कभी भी खुला नहीं रहता है, जिससे अपरदन नहीं होता है। जुताई के द्वारा अपरदन को रोकने की पद्धति में ढलुआ खेतों की ढाल की अनुप्रस्थ दिशा में जुताई की जानी चाहिए, जिससे धरातलीय प्रवाह कम हो जाता है। पहाड़ी हिस्से के खेतों में सीढ़ीदार खेत निर्मित किये जाने चाहिए। भूमि को उसी प्रयोग के लिए आवंटित किया जाए जिसके लिए वह उपयुक्त है। साथ ही वनों का अन्धाधुन्ध कटाव रोकना और वानिकी का विस्तार करना सुनिश्चित किया। नदियों के उद्गम स्थल, भूक्षरण वाले क्षेत्र तथा समुद्रतटीय रेत के टीलों को रोकने के लिए वहाँ के क्षेत्र में वृक्षों की कटाई को एकदम रोकना तथा वृक्षारोपण करना चाहिए।

मृदा प्रदूषण निवारण के वैदिक उपाय

प्राणि–जगत् के जीवन के लिए जैवमण्डल अर्थात्–पर्यावरण के तीनों जैवमण्डल अत्युपयोगी हैं।

इनमें से एक भी नष्ट या अतिदूषित होने पर जीव का अस्तित्व सम्भव नहीं है। अथर्ववेद में कहा है–

"सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धरयन्ति"[8]

अर्थात्– पृथ्वी के प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्ति के श्रेष्ठ मानव बनना होगा, क्योंकि दैवीय गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही पृथ्वी को प्रदूषित करने वाले आसुरी प्रवृत्तियों से सम्पन्न असुरों को नष्ट कर सकता है?[9] सभी भोग्य पदार्थों को देने वाली पृथ्वी की रक्षा प्राणपण से आलस्य रहित वीर पुरूष ही कर सकते हैं।

"यस्ते गन्धः ..... मा सुरभि कृणु"[10]

अर्थात् –हे पृथ्वी जो तुम्हारीगन्ध कमल में प्रविष्ट हुई है। जैसे–उषापान करने के लिए प्रातः काल की बेला में मानव शीतल मन्द सुगन्धित वायु से भ्रमण करने जा रहे हैं और वह पृथ्वी की गन्ध की कामना करता है, जो उसको अत्यन्त प्रिय है और जो प्राणी–जगत् तेरी सुगन्धि से सुगन्धित हो रहा है उस सुगन्ध से मुझे भी सुगन्धित करो। अथर्ववेद में कहा है[11] कि पृथ्वी की स्वाभाविक गन्ध जहाँ–जहाँ प्रदूषण है। वहाँ–वहाँ यह गन्ध नष्ट हो गयी है, जिसके कारण प्राणी–जगत् अस्वस्थ हो जाता है और कभी–कभी बहुत ही भयंकर रोग से ग्रसित हो जाता है, जो आज के प्रदूषित वातावरण की देन है।

व्यवस्थितः पृथिव्यां गन्धः[12] अर्थात्– पृथ्वी में गन्ध गुण स्वाभाविक है। मिट्टी की शक्ति का अनुपात से अधिक प्रयोग करने से तथा कीटनाशक औषधियों एवं कृत्रिम खादों को बहुतायत से प्रयोग करने से पृथ्वी की स्वाभाविक गन्ध की हानि होती है। पृथ्वी तत्त्व प्रदूषित होने लगता है।

यते भूमे .....मा ते हृदमर्पिपम्[13]

अर्थात् –पृथ्वी पर अनुचित खेती करने से हम उसकी उर्वरा शक्ति को कम करते है। गर्भस्थ तत्त्वों का विखनन करते हैं और यदि उनकी पूर्ति न हो तो एक ऐसा असन्तुलन उत्पन्न होगा जो प्राणिमात्र के लिए हानिकारक होगा, जो कमी खनन से हो जाए उसकी पूर्ति शीघ्र हो।

"तवमस्यावपनी ..... पृथमजा त्रतस्य"[14]

अर्थात् – जो व्यक्ति या समूह हमारी भूमि पर ये औषधियों या वनस्पति को चोरी छुपे काट रहा हैं। जिस से हमारी भूमि प्रदूषण फैलने की सम्भावना हो उस व्यक्ति को उस प्रकार भगा देना चाहिए जिस प्रकार से घोड़ा अपने शरीर में लगी धूल को झाड़कर भगा देता है।

"यस्यां वृक्षा ..... धृतामच्छावदामसि"[15]

अर्थात् – जिस पृथ्वी पर वनस्पति, पेड़ और लता आदि सदा स्थिर रहते है ऐसी पृथ्वी सब को धारण करने वाली है उस धारण की गई अर्थात् – भली भाँति सुरक्षित की गई तथा स्वच्छ पवित्र पृथ्वी को निवास के लिए बनानी चाहिए। हमें भूमि को प्रदूषण करने वाले कर्म नहीं करने चाहिए अन्यथा हम अपनी पवित्रता को खो देंगे, अतः हम अपने पवित्र कर्म करने वाले हों।

"यस्यां समुद्र उत..... पृथ्वी स्योनमस्त"[16]

अर्थात् – प्राचीन ऋषियों का चिन्तन पर्यावरण में किसी प्रकार के प्रदूषण का स्वागत नहीं करता है। यह पृथ्वी सुन्दर रूपवाली शांति कारक सुगन्धयुक्त, सुख देने वाली, अन्न देने वाली, बहुत जलों वाली, इच्छाओं को पूर्ण करने वाली, स्तुति योग्य एवं कल्याणमयी है। पृथ्वी संरक्षण मानव का कर्त्तव्य है और वह तब ही सम्भव है जब वह प्रतिबद्ध होकर पृथ्वी की रक्षार्थ करणीय कार्यों को यथा कर भार, बलिदान, सेवा, त्याग, अपरिग्रह इत्यादि से पूर्णता को सम्पन्न करने में सहयोग करें।

मृदा प्रदूषण के वर्तमान एवं वैदिक निवारण की तुलना

वर्तमान में मनुष्य भूमि का अत्यधिक दोहन कर रहा है। उसने भूमि का उपयोग किया और ध्वस्थ करके छोड़ दिया। नंगे पहाड़ तथा जमीन कटान उसके स्थायी पदचिह्न बन गये। मृदा प्रदूषण का मूल कारक हमारी मानसिकता है, जिससे हम प्रकृति को भोग्य मानकर शोषण करते है।[17] प्रदूषण फैलाते है। मानव के वर्तमान में मृदा प्रदूषण निवारण के संदर्भ में, चिन्तन की दिशा उचित न होने के कारण समस्या ज्यों की त्यों खड़ी है। धीरे–धीरे विकराल रूप धारण कर रही है तथा जनमानस इस समस्या से अनभिज्ञ है। क्योंकि मानव स्वार्थ के वशीभूत होकर श्रेष्ठ मानव बनना ही नहीं चाहता और प्रकृति को स्वच्छ रखने में कोई योगदान नहीं कर रहा है।

वैदिक ऋषियों के द्वारा अपने आपको भूमि का पुत्र कहा है। जब हम भूमि को माँ का दर्जा देंगे तो उसे गन्दा करने का तो ख्याल ही मन में नहीं आ सकता। इसके अलावा यज्ञ करने, वृक्ष लगाने, प्रदूषण फैलाने वाले को दण्ड देने तथा श्रेष्ठ मानव बनने का जो आह्वान किया है उससे मानव अपने आप परिवर्तन करेगा तथा, भूमि को मां मानकर पुत्र जैसा व्यवहार करेगा। वर्तमान में वेदों को पढ़ने व पढ़ाने तथा प्रदूषण को नष्ट करने के लिए वैदिक पद्धति अपनाने की जरूरत है।

सार

पृथ्वी के प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनना होगा, क्योंकि दैवीय गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही मृदा प्रदूषण होने से बचा जा सकता है। वेदों में बीजों को कृषि भूमि में बोने से पहले गाय के घी व दूध से उपचारित करने के लिए कहा गया है। यज्ञ के द्वारा बचा हुआ राख भी खाद की तरह कृषि भूमि में काम किया जा सकता है। वेदों में लिखा है कि भूमि को माता हम तभी कह सकते हैं जब उसके आंचल को प्राकृतिक वनस्पति व वृक्षों से ढक देंगे व उसके सरंक्षण के लिए प्राकृतिक खाद व जैविक संतुलन को बनायेंगे तब ही हम इसके पुत्र कहलाने के अधिकारी होंगे।

वैदिक परम्परा के अनुसार पृथ्वी में मातृत्व भावना रखें, यज्ञ का प्रयोग करें। सार्वजनिक हित के लिए पवित्र बुद्धि से किये वैज्ञानिक अन्वेषण जो बहुपक्षीय एवं दूरगामी हित को भी साधने वाले हों किये जाएँ तथा पृथ्वी प्रदूषण करने वाले समाज विरोधी तत्त्वों के साथ दण्ड सहिंता के अनुसार सांवैधानिक नियमों का कड़ाई के साथ पालन कराया जाए तो सुरसा के मुख के समान फैलते पृथ्वी के प्रदूषण के विस्तार को न्यून करते हुए समाप्त कर सकेंगे।

निष्कर्ष

पृथ्वी के प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनना होगा, क्योंकि दैवीय गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही पृथ्वी को प्रदूषित करने वाले आसुरी प्रवृत्तियों

से सम्पन्न असुरों को नष्ट कर सकता है? सभी भोग्य पदार्थों को देने वाली पृथ्वी की रक्षा प्राणपण से आलस्य रहित वीर पुरूष ही कर सकते हैं।

वैदिक ऋषियों के द्वारा अपने आपको भूमि का पुत्र कहा है। जब हम भूमि को माँ का दर्जा देंगे तो उसे गन्दा करने का तो ख्याल ही मन में नहीं आ सकता। इसके अलावा यज्ञ करने, वृक्ष लगाने, प्रदूषण फैलाने वाले को दण्ड देने तथा श्रेष्ठ मानव बनने का जो आह्वान किया है उससे मानव अपने आप परिवर्तन करेगा तथा, भूमि को मां मानकर पुत्र जैसा व्यवहार करेगा। वर्तमान में वेदों को पढ़ने व पढ़ाने तथा प्रदूषण को नष्ट करने के लिए वैदिक पद्धति अपनाने की जरूरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अथर्ववेद – 12/1/12*
2. *निघण्टु – 1/1*
3. *अथर्ववेद – 12/1/26*
4. *अथर्ववेद – 5/28/5*
5. *अथर्ववेद – 12/1/10, 12*
6. *वैदिक चिन्तन और आधुनिक पर्यावरण विज्ञान, पृ.–159*
7. *बिगड़ता पर्यावरण (डॉ. शिवगोपाल मिश्र), पृ.–41*
8. *अथर्ववेद – 12/1/1*
9. *अथर्ववेद – 12/1/5*
10. *अथर्ववेद – 12/1/24*
11. *अथर्ववेद – 12/1/25*
12. *वैशेषिक दर्शन– 2/2*
13. *अथर्ववेद – 12/1/35*
14. *अथर्ववेद – 12/1/61*
15. *अथर्ववेद – 12/1/27*
16. *अथर्ववेद – 12/1/3, 2, 11*
17. *संरक्षण का विनास, पृ–7*